व्यास पूर्णिमा
२१ जुलाई, २००५

व्यास पूजा-का पुण्य पर्व महर्षि व्यासदेव के आध्यात्मिक उपकारों के लिए उनके श्री चरणों में श्रद्धा-सुमन अर्पित करने का दिवस है। उनके अमर सन्देश को प्रत्येक साधक जीवन में उतारे - ''मैं और मेरा बन्धन का कारण, तू और तेरा मुक्ति का साधन''। आज जगद्गुरु परमेश्वर के पूजन का पर्व है। स्वामी जी महाराज के अनुसार आज का यह मांगलिक दिन आध्यात्मिक सम्बन्ध स्मरण करने के लिए नियत है अर्थात गुरु अथवा मार्ग-दर्शक एवं शिष्य के अपने अपने कर्तव्य को याद करने का दिवस है।

जब तक सोना सुनार के पास, लोहा लौहार के पास, कपड़ा दर्जी के पास न जाये, उसे आकार नहीं मिलता। तद्वत शिष्य जब तक अपने आपको गुरु के हवाले नहीं कर देता, अपने अहं को मिटा, समर्पित नहीं कर देता, तब तक वह क पा-पात्र नहीं बन पाता। गुरु वह जो अनुभूत हो, समद ष्टि हो, सर्वत्र राम-दर्शन करने वाला संत हो, अखिल विश्व के लिए हृदय से प्रेम-गंगा प्रवाहित करने वाला हो, दयालु, क्षमावान एवं शान्त हो। स्वामी जी फरमाते हैं :

''गुरु तो ऐसा चाहिए, स्वार्थ से हो पार।
परमार्थ में रत रहे, कर पर हित उपकार।।
वास करे जिस स्थान में, कर हरि नाम विख्यात।
ईश प्रेम बांटे सदा, पूछे जात न पात।।
राम-रंग रंगा रहे, जो आय करे लाल।
ओंकार निराकार को, जाने राम अकाल।।

राह दिखाने वाले का चरित्र, स्वभाव, आचरण ऐसा हो जिसका प्रत्येक मानव अनुकरण कर सके। एक सम्राट जंगल में शिकार के लिए गये। रात को वहीं रुकना पड़ा। भोजन की तैयारी शुरु हो गयी। रसोईये के पास सारा सामान, पर नमक भूल गया, मांगने के लिए पास वाले गांव में जाने लगा तो राजा ने बुलाकर कहा, ''देखो, जितना नमक लाओ, उतने पैसे दे आना।'' रसोईये ने तत्काल कहा, ''हजूर नमक के कौन पैसे लेगा'' ? सम्राट क्रुद्ध - कहा, भाई ! छोटी बात का किसी को फर्क न पड़े पर मुझे पड़ेगा-कल को अधीन काम करने वाले इसी प्रकार बिन मूल्य चुकाये चीज़े लेनी शुरु कर देंगे और यह कहेंगे कि सम्राट ने भी तो ऐसा किया था। एक गल्त रिवाज़ शुरु हो जायेगा। मार्ग-दर्शक को पग पग पर चौकन्ना रहना चाहिये। जो

सावधान रहे वही है साधक। संत की शरण में जब रज-तुल्य विनम्र होकर जाता है, तो संत साधक को अपने जैसा बना देता है। साधक सीखने के लिए जाये, सिखाने के लिए नहीं। चिरकाल संगति उपरान्त भी लोग लाभ नहीं उठा पाये, क्योंकि बहुधा आत्मिक-उन्नति के लिए नहीं, स्वार्थ-पूर्ति के लिए जाते हैं। ऐसों में प्रेम नहीं, ईर्ष्या-द्वेष भरा होता है, ये दूसरों को नीचा दिखाने, भीतर से काटने में प्रयत्नशील रहते हैं अर्थात गुरु के सामने कुछ और भीतर से भिन्न होते हैं। गुरु की समीपता में दुर्बलताएं, दुर्गुण दूर करें, दुर्विचार रहित बनें। यदि नहीं तो समय व्यर्थ। सब से प्रेम करना सीखें, तप, त्याग सीखें ताकि जीवन शान्तिमय हो। हम कहलाते तो शिष्य है, पर बन कर रहते हैं, गुरु, अतः अपने आपको बड़ा सिद्ध, प्रदर्शित करने की चेष्टा ही उनकी साधना। गुरु के लिए इससे बढ़ कर दुःख का कारण कोई नहीं, जब वह अपने शिष्यों को अग्र कहलाने व बनने के लिए लड़ते-झगड़ते देखता है। गुरु की उपस्थिति में राम-नाम अविराम अपनी जिह्वा पर रखें, अपना निरीक्षण करें तथा दुर्गुण-त्रुटियों को दूर करने के लिए, मन के पवित्रीकरण के लिए साधना करें, क पा मांगें। जब शिष्य मन्त्र की आराधना सतत, नित्य एवं निरन्तर करेगा, तभी घातक दुर्विचारों, दुष्व त्तियों, विकारों व कामना से छुटकारा पायेगा। यदि गुरु आज्ञा मान ऐसा करेगा तो जीवन दिव्यता से, शान्ति एवं विवेक से प्रबुद्ध होगा। गुरु-शिष्य का यही सही सम्बन्ध है अन्यथा लोग बेकार चक्कर लगा गुरु को परेशान करते हैं तथा अपना समय बर्बाद करते हैं। मात्र यह कहना कि हम स्वामी सत्यानन्द जी महाराज के शिष्य हैं, पर्याप्त नहीं, उनके आदेशों, उपदेशों का अनुकरण करें, सिद्धान्तों पर, चरण-चिन्हों पर चलें तथा नियमों का पालन करें। क पा-पात्रता के लिए यह हमारा परम कर्तव्य है। स्वामी जी फरमाते हैं :

'' सच्चे संत की शरण में, बैठ मिले विश्राम।
मन मांगा फल तब मिले, जपे राम का नाम।।

राम-नाम जप के माध्यम से अपनी तार परमेश्वर श्री राम से सदा जोड़े रखें। अति शुभ कामनाएं।

व्यास-पूर्णिमा के पुण्य पर्व पर स्वामी जी महाराज के परिवार के सभी सदस्यों को सादर चरण वन्दना एवं हार्दिक बधाई।

अपने
गुरुजनों का गुलाम
विश्वामित्र